40

जंगल में पुकारती एक आवाज़

यूहन्ना की सेवकाई, एक निकट दृष्टि

समय लगभग 26 ईस्वी और स्थान, यरदन के पार बैतनिय्याह था। लगभग तीस वर्ष की उम्र का एक प्रचारक मृत सागर के दोनों ओर के लोगों में हलचल मचा रहा था। याजकों और लेवियों का एक दल उसके पास आकर पूछने लगा, ''तू कौन है?'' (यूहन्ना 1:19ख)। उनके प्रश्न पूछने का कारण समझते हुए, उसने उज़र दिया, ''मैं मसीह नहीं हूं'' (यूहन्ना 1:20ख)। उन्होंने दबाव डालते हुए पूछा:

> तब उन्होंने उस से पूछा, तो फिर कौन है? ज़्या तू एलिय्याह है? उस ने कहा, मैं नहीं हूं: तो ज़्या तू वह भविष्यवज़्ता है? उस ने उज़र दिया, कि नहीं। तब उन्होंने उस से पूछा, फिर तू है कौन? ताकि हम अपने भेजने वालों को उज़र दें; तू अपने विषय में ज़्या कहता है (यूहन्ना 1:21, 22)।

उन्हें फिर यह रहस्यमय उज़र मिला: ''मैं ... जंगल में एक पुकारने वाले का शज़्द हूं'' (यूहन्ना 1:23क)।

अपने आप को ''जंगल में एक पुकारने वाले का शज़्द'' कहने वाला यह युवक यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला था।[1] उसके ये शज़्द यशायाह 40 से लिए गए थे, जिनमें मसीहा के आगे आने वाले के बारे में बताया गया था:

> किसी की पुकार सुनाई देती है, जंगल में यहोवा का मार्ग सुधारो, हमारे परमेश्वर के लिए अराबा में एक राजमार्ग चौरस करो। हर एक तराई भर दी जाए और हर एक पहाड़ और पहाड़ी गिरा दी जाए; जो टेढ़ा है वह सीधा और जो ऊंचा-नीचा है वह चौरस किया जाए (यशायाह 40:3, 4)।[2]

यूहन्ना 1:23 में ''जंगल में एक पुकारने वाले का शज़्द'' वाज़्यांश इस बात को संक्षिप्त करता है कि यूहन्ना ज़्या था: पहले और सबसे पहले, वह एक *पुकार* थी अर्थात वह संदेश लेकर आया एक आदमी था। वह संदेश विलक्षण स्थान अर्थात *जंगल में* दिया जाना था।

यूहन्ना मूलत: जंगल में ही प्रचार करता था, परन्तु यशायाह 40 और यूहन्ना 1 में ''जंगल'' का अर्थ पत्थरों और बिच्छुओं से भरा इलाका ही नहीं था। यूहन्ना पाप के जंगल में भी प्रचार कर रहा था। उसने वहां आवाज़ बनने का साहस किया, जहां दूसरी आवाज़ें शान्त हो गई थीं।

इस प्रवचन में हम यूहन्ना द्वारा अपने और हमारे समय के लिए संदेश देने के महत्व को समझने के लिए उस के जीवन पर संक्षेप में प्रकाश डालेंगे।[3]

असंयम के जंगल में ''अपने आपका इनकार करो'' पुकारती एक आवाज़

जब मैं यूहन्ना के बारे में सोचता हूं, तो मेरे ध्यान में तेज़ हवा से उड़ते बालों और तीखी धूप में काली पड़ी चमड़ी वाला आदमी आता है। वह ऊंट के बालों से बने वस्त्र पहनता था। उसकी कमर पर चमड़े की एक चौड़ी पेटी बंधी थी। वह लोगों से दूर रहता, और टिड्डियां[4] और जंगली शहद खाकर गुज़ारा करता था। वह आत्म-त्याग और आत्म-अनुशासन का निचोड़ था।

ऐसा आदमी कैसे तैयार हो गया? इसका एक कारण *परमेश्वर का भय रखने वाले माता-पिता* थे। उसका पिता जकर्याह एक याजक था; इलीशिबा उसकी माता थी (लूका 1:5)। लूका 1:6 उन दोनों के जीवनों के बारे में संक्षेप में बताता है: ''वे दोनों परमेश्वर के सामने धर्मी थे: और प्रभु की सारी आज्ञाओं और विधियों पर निर्दोष चलने वाले थे। उन के कोई भी सन्तान न थी।'' इस आयत का सबसे चौंकाने वाला भाग ''दोनों'' शब्द है। कइयों की माताएं परमेश्वर का भय रखने वाली होती हैं, परन्तु पिता नहीं। किसी का पिता परमेश्वर का भय रखने वाला होता है, पर मां नहीं। यूहन्ना के माता-पिता *दोनों* ही प्रभु से प्रेम रखते और उसकी विधियों के अनुसार चलते थे। उसके लिए इससे बड़ी विरासत और ज़्या हो सकती है।[5]

ईश्वरीय उद्देश्य एक और कारण था। आपको जकर्याह और इलीशिबा की कहानी याद होगी: वे कैसे सन्तान के लिए तड़पते थे, किस प्रकार स्वर्गदूत ने जकर्याह को दर्शन दिया और अन्त में कैसे इलीशिबा की कोख से यूहन्ना का जन्म हुआ।[6] मन्दिर में बुज़ुर्ग याजक से स्वर्गदूत द्वारा कहे गए शब्दों पर मैं ध्यान दिलाता हूं:

> हे जकर्याह, भयभीत न हो, ज़्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है और तेरी पत्नी इलीशिबा से तेरे लिए एक पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम यूहन्ना रखना। और तुझे आनन्द और हर्ष होगा: और बहुत लोग उसके जन्म के कारण आनन्दित होंगे। ज़्योंकि वह प्रभु के साज़्हने महान होगा; और दाखरस और मदिरा कभी न पीएगा; और अपनी माता के गर्भ ही से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएगा। और इस्राएलियों में से बहुतेरों को उन के प्रभु परमेश्वर की ओर फेरेगा। वह एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में हो कर उसके आगे-आगे चलेगा, कि पितरों का मन लड़के बालों की ओर फेर दे; और आज्ञा न मानने वालों को धर्मियों की समझ पर

लाए; और प्रभु के लिए एक योग्य प्रजा तैयार करे (लूका 1:13-17)।

यूहन्ना के जीवन के आरज़्भ से ही, इस पर कोई संदेह नहीं था कि वह कौन था और जीवन में उसका उद्देश्य ज़्या होना था। हर बच्चे को उसके माता-पिता द्वारा बताया जाना आवश्यक है कि उसके जीवन में परमेश्वर का कुछ उद्देश्य है।

तीसरा कारण *ईश्वरीय प्रशिक्षण था*। हमें उस प्रशिक्षण के बारे में बहुत कम बताया गया है, यद्यपि जकर्याह और इलीशिबा द्वारा लड़के को यह बताते रहना कि स्वर्गदूत ने ज़्या कहा था और उसे प्रभु से प्रेम करने और उसकी आज्ञा मानने के लिए प्रोत्साहित करते रहने की कल्पना करना कठिन नहीं है। जहां तक पवित्र शास्त्र बताता है, उसके प्रारज़्भिक जीवन के सज़्बन्ध में ये नपे-तुले विवरण मिलते हैं: ''और वह बालक बढ़ता और आत्मा में बलवन्त होता गया, और इस्राएल पर प्रकट होने के दिन तक जंगलों [जंगल[7]] में रहा'' (लूका 1:80)। हम नहीं जानते कि यूहन्ना मृत सागर के आस-पास के जंगली इलाके में कब और कैसे गया,[8] परन्तु परमेश्वर की बुद्धि ने, जंगल को उसके प्रशिक्षण क्षेत्र के रूप में चुना था। उस आधार से, वह देख सकता था कि असंयम के परिणामों के उपयुज़्त उदाहरण, किसी समय के घमण्डी नगर सदोम और अमोरा कहां थे।[9]

माता-पिता अपने बच्चों के लिए अच्छा माहौल चाहते हैं। हम में से अधिकतर लोग सोचते हैं कि स्वास्थ्य और सद्भावनापूर्ण स्थिति के लिए ''अच्छा माहौल'' आवश्यक है। यूहन्ना का प्रारज़्भिक माहौल पूर्वी यहूदिया का ऊबड़-खाबड़ इलाका था। वहां उसने स्वअनुशासन सीखा था। उसी जगह से, असंयम के जंगल में ''अपना इनकार'' करने की एक आवाज़ गूंजी।

ज़्या हम आज उस आवाज़ को सुन सकते हैं? आज हम असंयम की दुनिया में रहते हैं,[10] और हमें यूहन्ना के संदेश की बहुत ही आवश्यकता है। आखिर, यीशु ने कहा था, ''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इनकार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले'' (मज़ी 16:24)।

उसकी कठोर जीवन शैली के कारण (लूका 7:33), कुछ लोगों को लगता था कि उसमें दुष्टात्मा है। चेतावनी की यह बात सुनें: यदि हम अपने बजाय दूसरों की चिन्ता करेंगे, तो संसार हमारे बारे में यही सोचेगा कि हम पागल हैं, परन्तु यीशु ने ऐसे जीवन की आवश्यकता पर सबसे ज़्यादा ज़ोर दिया। बपतिस्मा देने की बात करते हुए, उसने अपने सुनने वालों से पूछा, ''तो फिर तुम ज़्या देखने गए थे? ज़्या कोमल वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को? देखो, जो भड़कीला वस्त्र पहिनते, और सुख विलास से रहते हैं, वे राजभवनों में रहते हैं'' (लूका 7:25)। यूहन्ना की सहज जीवन में कोई दिलचस्पी नहीं थी; राजाओं को अपने किलों में ऐश-ओ-आराम करने दो। यीशु ने यह अद्भुत बात भी कही: ''मैं तुम से कहता हूं, कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं, उन में से यूहन्ना से बड़ा कोई नहीं'' (लूका 7:28क)। जंगल में पुकारने वाली इस आवाज़ के लिए कितनी बड़ी श्रद्धांजलि है यह!

हम में से हर एक को चाहिए कि वह अपने जीवन की तुलना यूहन्ना के जीवन से

करके पूछे, ''ज़्या *मैं* स्वअनुशासन तथा आत्म इनकार का जीवन जी रहा हूं?''

आत्म-संतोष के जंगल में ''अपने मार्ग बदलो'' की पुकार की आवाज़

''जब समय पूरा हुआ,''[11] तो ''परमेश्वर का वचन जंगल में जकर्याह के पुत्र यूहन्ना के पास पहुंचा'' (लूका 3:2)। यूहन्ना के जीवन में, परमेश्वर का वचन ऐसा था जैसे तेज़ धावक के लिए आरज़्भ करने के लिए पिस्तौल की ''आवाज़'' हो, जैसे किसी योद्धा के लिए घण्टी की आवाज़, जैसे बुलडॉग के लिए ''अटैक'' शज़्द।[12]

यूहन्ना तुरन्त प्रचार करने लगा, ''उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला आकर यहूदिया के जंगल में यह प्रचार करने लगा, मन फिराओ, ज़्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है'' (मज़ी 3:1, 2)। उसका काम लोगों को आने वाले मसीहा तथा उसके राज्य के लिए तैयार करना था। अपने सुनने वालों को यह बताते हुए कि वे अपने जीवनों को मोड़ लें उसने साफ़-साफ़ शज़्दों में कह दिया:

> जो भीड़ की भीड़ उस से बपतिस्मा लेने को निकल कर आती थी, उन से वह कहता था; हे सांप के बच्चो, तुज़्हें किस ने जता दिया, कि आने वाले क्रोध से भागो। सो मन फिराव के योग्य फल लाओ: और अपने-अपने मन में यह न सोचो, कि हमारा पिता इब्राहीम है; ज़्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिए सन्तान उत्पन्न कर सकता है (लूका 3:7, 8)।

बहुत देर तक लोगों को यही लगता था कि परमेश्वर उन्हें केवल इसलिए स्वीकार कर लेगा कि वे यहूदी हैं। यूहन्ना का संदेश घड़ी का अलार्म था, जो उन्हें जगाने के लिए तैयार किया गया था! वास्तव में उसने उन्हें बताया कि यदि वे अपने जीवनों में बड़े परिवर्तन नहीं करते, तो वे ''परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं'' थे (देखें लूका 9:62)।

> और लोगों ने उस से पूछा, तो हम ज़्या करें? उस ने उन्हें उज़र दिया, कि जिस के पास दो कुरते हों, वह उसके साथ जिस के पास नहीं है बांट दे और जिस के पास भोजन हो, वह भी ऐसा ही करे। और महसूल लेने वाले भी बपतिस्मा लेने आए, और उस से पूछा, कि हे गुरु, हम ज़्या करें? उस ने उन से कहा, जो तुज़्हारे लिए ठहराया गया है, उस से अधिक न लेना। और सिपाहियों ने भी उस से यह पूछा, हम ज़्या करें? उस ने उन से कहा, किसी पर उपद्रव न करना, और न झूठा दोष लगाना, और अपनी मज़दूरी पर संतोष करना (लूका 3:10-14)।[13]

आज भी हमें स्पष्ट और साफ़-साफ़ प्रचार की आवश्यकता है। हमें ऐसे प्रचार की आवश्यकता है, जो हमें जगाकर स्वर्ग के लिए तैयार कर सके। पाप की निंदा ऐसे सामान्य शज़्दों में करना सज़्भव है, जिससे कोई पापी अपने आप को दोषी न पाए। यूहन्ना का प्रचार स्पष्ट

और व्यावहारिक था।

लूका 3:18 कहता है कि ''[यूहन्ना] बहुत सी शिक्षा दे देकर लोगों को सुसमाचार सुनाता रहा।'' ''सुसमाचार'' शब्द का अर्थ ''शुभ समाचार'' है। लोगों को किस अर्थ में स्वार्थी न होने, बेईमान न होने और अपने अधिकार का दुरुपयोग न करने का ''शुभसमाचार'' सुना रहा था? यह ''शुभसमाचार'' था, क्योंकि इससे उनका आत्म-संतोष खत्म करके, उन्हें अपने जीवनों की फिर से समीक्षा करने को बाध्य किया गया और उन्हें ऐसे लोग बनने के लिए प्रोत्साहित किया गया, जिन पर परमेश्वर अपने अनुग्रह की बारिश कर सकता है!

क्या हम ''प्रेम में सच्चाई [पूरी सच्चाई]'' बताने वाले की सराहना करते हैं (इफिसियों 4:15; देखें गलातियों 4:16)? मुझे उम्मीद है। हमें चाहिए कि जिस प्रकार हम कमज़ोर दिल वाले सर्जन (ऑपरेशन करने वाले डॉक्टर) को नहीं चाहते, वैसे ही कमज़ोर प्रचारक की इच्छा न करें। मुझे यह भी उम्मीद है कि जहां आवश्यकता है, वहां हम ''अपने मार्ग बदलो!'' पुकारने वाली आवाज़ भी *बनने* को तैयार हैं (देखें गलातियों 6:1; याकूब 5:19, 20)।

संदेह के जंगल में ''विश्वास'' करो पुकारने वाली आवाज़

एक दिन जब यूहन्ना यरदन के निकट प्रचार कर रहा था, तो यीशु बपतिस्मा लेने के लिए उसके पास आया। आपको यह कहानी याद ही होगी कि कैसे यूहन्ना मसीह को बपतिस्मा देने से इनकार कर रहा था, परन्तु कैसे उसने उसे समझाया और कैसे यीशु के बपतिस्मे के बाद परमेश्वर ने स्वर्ग से बात की और पवित्र आत्मा कबूतर की तरह नीचे उतरा (मत्ती 3:13-17)।[14]

इन प्रदर्शनों से यूहन्ना को पक्का विश्वास हो गया कि यीशु ही वह मसीहा था, जिसके लिए वह मार्ग तैयार कर रहा था! उसी घड़ी से, यूहन्ना का पसंदीदा संदेश था ''देखो यह परमेश्वर का मेमना है''!

> दूसरे दिन उस ने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, देखो, यह परमेश्वर का मेमना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है (यूहन्ना 1:29)।
>
> दूसरे दिन फिर यूहन्ना और उसके चेलों में से दो जन खड़े हुए थे। और उस ने यीशु पर, जो जा रहा था, दृष्टि करके कहा, देखो, यह परमेश्वर का मेमना है (यूहन्ना 1:35, 36)।

यूहन्ना ने यह प्रचार नहीं किया कि यीशु केवल एक भला मनुष्य और महान शिक्षक ही है बल्कि उसने उसके हमारे पापों के लिए बलिदान होने का प्रचार किया, जिसके द्वारा हमारा उद्धार हो सकता था!

अविश्वास तथा संदेहवाद के संसार में, यूहन्ना की तुरही की पुकार आज भी सुनाई देनी आवश्यक है। यीशु परमेश्वर का पुत्र है! वह मनुष्य की एकमात्र आशा है! आइए हम

उसी विश्वास के साथ, जो यूहन्ना का था, इस बात का प्रचार करें!

घमण्ड के जंगल में ''दीन होने'' की पुकार की आवाज़

यीशु का बपतिस्मा यूहन्ना की सेवकाई का चरम था। उस समय तक, उसका काम मूलत: पूरा हो चुका था, और उस समय से उसकी सेवकाई कम होने लगी थी। मसीहा के अग्रदूत के रूप में, यूहन्ना की मुज़्यतया तीन ज़िम्मेदारियां थीं: मसीहा के लिए रास्ता साफ़ करना, मसीहा के लिए रास्ता तैयार करना, और फिर मसीहा के रास्ते से हट जाना![15] यूहन्ना को इससे कोई परेशानी नहीं थी; वह कोई भी भूमिका निभाने के लिए तैयार था, जो परमेश्वर ने उसके लिए तैयार की थी।

मेरे साथ यूहन्ना 3 अध्याय में चलें, जो यूहन्ना की सच्ची महानता की मुज़्य बात है। मसीह की प्रसिद्धि बढ़ने पर यूहन्ना के चेले उसके पास आकर उससे कहने लगे, ''हे रज़्बी, जो व्यज़्ति यरदन के पार तेरे साथ था, और जिस की तू ने गवाही दी है देखा, वह बपतिस्मा देता है, और सब उसके पास आते हैं'' (आयत 26)। ज़्या आपको उनकी बातों में ईर्ष्या का स्वर सुनाई देता है? या यूं कहें कि वे कह रहे थे, ''एक समय था जब सब लोग हमारे पास आ रहे थे, पर अब वे *उस के* पास जाते हैं। कभी हम आकर्षण का केन्द्र थे, परन्तु अब प्रकाशबिन्दु *उस* पर पड़ता है। *आपने* उसे बपतिस्मा दिया; ज़्या लोगों को पता नहीं कि इससे *आप* के उससे महान होने की बात पज़्की होती है?''

सेनापतियों में ईर्ष्या के कारण युद्ध हारे जाते रहे हैं। यदि उसके चेलों की ईर्ष्या यूहन्ना द्वारा भड़काई गई होती, तो यीशु की लहर के जन्म से पहले ही उसके नाश पर विचार करें। उनकी शिकायत पर बपतिस्मा देने वाले की प्रतिक्रिया को सुनें और उस पर आश्चर्य करें। उसने पहले तो कहा, कि मसीह की सफलता परमेश्वर की इच्छा है: ''जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए, तब तक वह कुछ नहीं पा सकता'' (आयत 27)। फिर उसने ज़ोर देकर कहा कि जो कुछ हो रहा है उससे वह खुश है:

> तुम तो आप ही मेरे गवाह हो, कि मैं ने कहा, मैं मसीह नहीं, परन्तु उसके आगे भेजा गया हूं। जिस की दुल्हिन है, वह दूल्हा है: परन्तु दूल्हे का मित्र जो खड़ा हुआ उस की सुनता है, दूल्हे के शज़्द से बहुत हर्षित होता है; अब मेरा यह हर्ष पूरा हुआ है (आयतें 28, 29)।

अन्त में, उसने यह अद्‌भुत शज़्द कहे ''अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूं'' (आयत 30)। ऐसी बात कहना बड़े, बल्कि बहुत बड़े आदमी की पहचान है!

बहुत से सफल प्रचारक, जिन्हें मैं जानता हूं, यूहन्ना वाली दुविधा में होते हैं। वे मानें या न मानें परन्तु उन्हें अपनी प्रशंसा अच्छी लगती है। परन्तु एक नींव के रूप में जब सज़्मानित प्रचारक बूढ़े हो जाते हैं, तो उन्हें प्रचार करने के लिए बहुत कम बुलाया जाता है और प्रकाशबिन्दु जवान प्रचारकों पर पड़ने लगता है। हमारे लिए यह कहना कितना कठिन है कि ''यह अच्छा है। आवश्यक है कि वे बढ़ें और हम घटें। परमेश्वर उनके साथ हो!''

अहंकार केवल प्रचारकों को ही नहीं सताता। यदि किसी दूसरे की तारीफ़ कर दी जाए, जो हमें लगता हो कि हमारी होनी चाहिए थी, तो ज़्या होगा? यदि दूसरे को अच्छा काम या उन्नति मिल जाए? ज़्या हम ईमानदारी से कह सकते हैं कि हम उनके लिए प्रसन्न हैं? ज़्या हम सच्चे मन से कहते हैं, ''आवश्यक है कि वे बढ़ें और हम घटें''?

हम में से कइयों के लिए, यह कोई छोटी चुनौती नहीं है। याद रखें कि ''परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है'' (याकूब 4:6ख)। परमेश्वर यूहन्ना जैसे बनने में हमारी सहायता करे, जो घमण्ड के संसार में ''दीन बनो'' की आवाज़ था।[16]

कायरता के जंगल में ''बहादुर बनो'' पुकारती एक आवाज़

यूहन्ना के जीवन की और घटनाओं का अध्ययन किया जा सकता है,[17] परन्तु हम यह पाठ उसके जीवन के अन्तिम दृश्य के साथ समाप्त कर देंगे। हमने पहले ही कहा था कि उसका प्रचार स्पष्ट और व्यावहारिक था। यह अत्यन्त व्यज़्तिगत भी था। राजा हेरोदेस पर दोष लगाने का उदाहरण सबसे उपयुज़्त होगा।

> ... उस ने चौथाई देश के राजा हेरोदेस को उसके भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के विषय, और सब कुकर्मों के विषय में, जो उसने किए थे, उलाहना दिया (लूका 3:19)।

> ... हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के कारण, यूहन्ना को पकड़कर बांधा, और जेलखाने में डाल दिया था, ज़्योंकि यूहन्ना ने उससे कहा था इस को रखना तुझे उचित नहीं है (मज़ी 14:3, 4)।

यूहन्ना और हेरोदेस का आमना-सामना कैसे हुआ, इसके बारे में हम विस्तार से नहीं जानते। ज़्या हेरोदेस यूहन्ना का संदेश सुनने के लिए आया था?[18] (मैं यूहन्ना को सुन रही भीड़ के पीछे उसके शाही दल के बैठने की कल्पना कर सकता हूं।) ज़्या यूहन्ना हेरोदेस के किसी किले में गया था? (मैं इस प्रचारक के हेरोदेस के दरबार में खड़े होने, संदेश देते समय उसकी ओर आंखें फाड़-फाड़ कर देखने की कल्पना कर सकता हूं।) हमें विस्तार से नहीं बताया गया है, परन्तु यूनानी शास्त्र से संकेत मिलता है कि यूहन्ना उसे कहता *रहा* कि हेरोदियास के साथ उसका विवाह अवैध था।

इसके लिए साहस, बल्कि ज़बर्दस्त साहस होना आवश्यक था! इसके लिए साहस की आवश्यकता थी, ज़्योंकि हेरोदेस एक महत्वपूर्ण व्यज़्ति अर्थात प्रभावशाली आदमी था। साहस इसलिए भी आवश्यक था, ज़्योंकि यूहन्ना सीधे उसी पर उंगली उठा रहा था। पुलपिट से सामान्य तौर पर किसी पाप की निन्दा करना और किसी दूसरे को यह कहना कि ''तू गलत है'' अलग बात है।[19] यहां साहस आवश्यक था, ज़्योंकि यूहन्ना वही कह रहा

था, जो हेरोदेस और हेरोदियास के लिए सुनना आवश्यक था, न कि वह जो वे सुनना चाहते थे। कई ''सुसमाचार संदेश'' किसी के लिए ठोकर नहीं होते, परन्तु यूहन्ना ने तो जैसे बिना सोचे-समझे कि इसका परिणाम ज़्या होगा कह दिया, ''तेरे लिए उसके साथ रहना उचित नहीं है'' और इसी बात से वह परेशान हो गया था! साहस इसलिए भी आवश्यक था, ज़्योंकि इस भविष्यवज़्ता को पता होना चाहिए था कि उसकी बातें उसके लिए जानलेवा हो सकती हैं। बिना खतरनाक परिणामों के हेरोदियास जैसी[20] पत्नी के साथ हेरोदेस को चिढ़ाया नहीं जा सकता था। यीशु ने कहा कि यूहन्ना ''हवा से हिलता हुआ सरकण्डा'' नहीं था (मज़ी 11:7), बल्कि वह पाप के विरुद्ध बोलने वाली परमेश्वर की अडोल और साहसी आवाज़ थी।

एक बार फिर, आपको इस घटनाक्रम का विवरण पता होगा: यूहन्ना की गिरज़्तारी कैसे हुई और कैसे अन्त में शराब की दावत, नाचने वाली लड़की और बदला लेने वाली पत्नी के कारण उसे अपनी जान गंवानी पड़ी।[21] मनुष्य की परज़्परा के अनुसार, जब यूहन्ना का सिर हेरोदियास के पास लाया गया, तो उसने इस नबी की जीभ के आर-पार एक लज़्बी सूई गाड़ दी और ज़ोर से चिल्लाई, ''तुम अब दोबारा नहीं कहोगे कि 'तेरे लिए इसके साथ रहना उचित नहीं है'!''

हेरोदियास ने सोचा होगा कि उसने यूहन्ना को चुप करा दिया है, परन्तु ऐसा नहीं था। शूरवीरों की आवाज़ को दबाया नहीं जा सकता। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु हेरोदेस के मन में बैठ गई और जब उसने यीशु के काम के बारे में सुना तो उसे लगा कि यीशु मुर्दों में से जी उठा यूहन्ना ही है (मरकुस 6:14)। यूहन्ना के मर जाने के बाद भी कुछ समय तक, उसका प्रभाव इतना अधिक था कि यीशु ने अपने प्रश्नों का उज़र देने के लिए यूहन्ना के काम का हवाला दिया (मज़ी 21:23-27; लूका 20:2-8)।

परमेश्वर हमें यूहन्ना जैसा साहस दे: पाप के विरुद्ध बोलने का साहस, चाहे वह ऊंचे स्थानों पर हो या निचले; लोगों को व्यज़्तिगत तौर पर जाकर उनके पाप के बारे में बताने का साहस; लोगों की आवश्यकता के अनुसार बोलने का साहस, आवश्यक नहीं कि वह जो वे सुनना चाहते हैं; किसी भी सज़्भावित परिणाम के बावजूद, सत्य का पक्ष लेने का साहस। यीशु आज भी हम में से हर एक को चुनौती देता है: ''... विश्वासी रह, चाहे तुझे मरना भी पड़े; यदि तू विश्वासी रहे तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा'' (प्रकाशितवाज़्य 2:10; न्यू सैंचुरी वर्ज़न)।

सारांश

यूहन्ना ''... जंगल में पुकारती एक आवाज़'' था:

... असंयम के जंगल में ''अपने आपका इनकार करो'' पुकारती आवाज़
... आत्म-संतोष के जंगल में ''अपने मार्ग बदलो'' की पुकारती आवाज़
... संदेह के जंगल में ''विश्वास करो'' पुकारती आवाज़
... घमण्ड के जंगल में ''दीन होने'' की पुकारती आवाज़
... कायरता के जंगल में ''बहादुर बनो'' पुकारती आवाज़

यूहन्ना ऐसी आवाज़ कैसे बन सका ? इसका रहस्य ज़्या था ? वह पूरी तरह परमेश्वर और उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए समर्पित था। इस कारण उसमें दूसरों से हटकर होने का साहस था। वह वहां बोलने को तैयार था, जहां दूसरों के स्वर शान्त हो चुके थे।

परमेश्वर आज हमें यूहन्ना जैसे और पुरुष तथा स्त्रियां दे। परमेश्वर हम में से हर एक की और भी यूहन्ना जैसे *बनने* में सहायता करे![22]

टिप्पणियां

[1]इस प्रवचन में बीच में कहीं आप ''बपतिस्मा देने वाला या बपतिस्मा दाता'' का अर्थ पूछने के लिए कह सकते हैं। (''मसीह का जीवन, भाग-1'' में पृष्ठ 30 पर टिप्पणी 12 पर विचार करें।)। [2]आपको चाहिए कि यह समझाएं कि कैसे संदेशवाहक या हरकारे आने वाले राजा की घोषणा ही नहीं करते थे, बल्कि उसके आने की तैयारी भी करते थे-आवश्यक वस्तुएं उपलज़्ध कराकर और (जैसे इस बाइबल पाठ में ज़ोर दिया गया है) उस मार्ग को तैयार करवाकर जिस पर से उसने आना हो सकता था। [3]इस प्रवचन पर मेरे नोट्स कई सालों में, इधर-उधर से सज़्भाल कर रखना आरज़्भ करने से पहले बनाए गए थे। अगर किसी को उपयुज़्त श्रेय न दिया गया हो तो इसके लिए मैं पहले से क्षमा मांग लेता हूं। [4]इस संदर्भ में, ''टिड्डियां'' उन्हें नहीं कहा गया जिन्हें हम में से अधिकतर लोग पुकारते हैं। ''टिड्डों'' पर विचार करें, और आप गलत नहीं होंगे। [5]मैं प्रभु का धन्यवाद करता हूं कि मुझे ऐसी विरासत मिली। यदि आपको भी ऐसी ही आशीष मिली थी, तो आपको चाहिए कि बताएं। [6]इस कहानी के विवरण के लिए, ''मसीह का जीवन, भाग 1'' पुस्तक में ''मसीह आ रहा है!'' पाठ देखें। यदि आपके सुनने वाले इस कहानी से परिचित नहीं हैं, तो आपको चाहिए कि कुछ मिनटों में इस पर विचार करके बताएं। [7]लूका 1:80 में अनुवादित ''जंगल'' का मूल यूनानी शज़्द वही है जिस से यूहन्ना 1:23 वाला ''जंगल'' शज़्द लिया गया है। [8]कुछ लोगों का सुझाव है कि छोटी उम्र में ही उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई थी जिस कारण वह जंगल में चला गया-परन्तु यह केवल अनुमान ही है। [9]कुछ विद्वानों का मत है कि सदोम और अमोरा वहीं या उसके आस पास ही स्थित थे, जहां यरदन नदी मृत सागर में मिलती थी। [10]मेरे नोट्स में आत्मसंयम के उदाहरण हैं जो वहां उपयुज़्त हैं जहां मैं रहता हूं। अपने सुनने वालों के लिए अनुकूल बनाने के लिए इस बात को विस्तार दें। यदि आप ऐसे माहौल में रहते हैं जहां कुछ विलासताएं हैं, तब भी यह प्रासंगिकता बनाई जा सकती है।

[11]गलातियों 4:4. [12]''अटैक'' हमला करने की आज्ञा के लिए कहा जाता है। [13]इस पद में आगे बढ़ते हुए संक्षेप में जहां आप रहते हैं वहां इसकी प्रासंगिकता बनाएं। यूहन्ना की कई बातें मुझे दोषी ठहराती हैं (जैसे ''संतोष करना'' शज़्द)। [14]''मसीह का जीवन, भाग 1'' में पृष्ठ 128, 129 पर यीशु के बपतिस्मे की कहानी की चर्चा की गई है। यदि आपके छात्र इस कहानी से परिचित नहीं हैं तो आपको चाहिए कि इन घटनाओं को विस्तार से बताएं। [15]यह वाज़्य चार्ल्स आर. स्विंडॉल, *जॉन द बेपटाइज़र* (अनाहेम, कैलिफ़ोर्निया: इनसाइट फ़ॉर लिविंग, 1991), 3 से लिया गया है। [16]यूहन्ना की दीनता की रोशनी प्रकाश में, यह व्यंग्यपूर्ण ही है कि कुछ लोगों ने उसे वह रुतबा देने का प्रयास किया है जो उसने स्वयं कभी नहीं चाहा था। अतीत में, यूहन्ना के समय में राज्य/कलीसिया की स्थापना होने की बात करने की आवश्कयता नहीं थी, पर मज़ी अध्याय 14 में यूहन्ना की मृत्यु की बात और अध्याय 16 में राज्य/कलीसिया की स्थापना की प्रतिज्ञा की बात बताता है। ''मसीह का जीवन, भाग 2'' में पृष्ठ 134 पर लूका 7:28 पर टिप्पणियों पर विचार करें। बीते समय में, कुछ लोग अपने आपको ''बैपटिस्ट'' कहलाने की बात उचित ठहराने के लिए इस शज़्द का इस्तेमाल करते थे। आपको चाहिए कि विस्तार से समझाएं कि ''बैपटिस्ट'' शज़्द का ज़्या अर्थ है। [17]उदाहरण के लिए, जेल में यूहन्ना के कुछ देर के रहने का वृज़ांत इस प्रवचन में शामिल नहीं किया गया। यह घटना दिलचस्प है

(''मसीह का जीवन, भाग 2'' में पृष्ठ 130 से आरम्भ होने वाले ''ज्या यीशु को ध्यान है ?'' पाठ का अध्ययन करें), परन्तु यह इस प्रस्तुति की सामान्य शब्दावली से मेल नहीं खाता। [18]बाद में यह कहा गया है कि हेरोदेस यूहन्ना को आनन्द से सुनता था (मरकुस 6:20), सो यह इस सद्भावना के क्षेत्र में नहीं आता। [19]इस पद में लिखित कुछ सच्चाइयां ''आत्म-संतोष के जंगल में 'अपने मार्ग बदलो' की पुकार की आवाज़'' शीर्षक के नीचे दी गई सच्चाइयों से मिलती-जुलती हैं। मुझे दोहराने में कोई आपत्ति नहीं है। दोहरा ज़ोर देने से इन सच्चाइयों के महत्व को स्थापित करने में सहायता मिलनी चाहिए। [20]हेरोदेस और हेरोदियास को नये नियम के आहाब और इज़बेल कहा गया है।

[21]यदि आपके सुनने वाले इस कहानी से अपरिचित हैं, तो आपको चाहिए कि इसे संक्षेप में बताएं। (इस पुस्तक में पहले आए ''सफलता का ख़तरा'' पाठ का अध्ययन करें।) [22]यदि आप इसका इस्तेमाल प्रवचन और सुसमाचार को मानने के निमन्त्रण की पेशकश के रूप में करते हैं, तो यह ज़ोर दें कि लोगों का लिए निमन्त्रण प्रभु को अपने जीवन देने के लिए है। इस बात पर ज़ोर दें कि विश्वास और आज्ञाकारिता के लिए नये नियम में कहा गया है (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:38) यह प्रत्युत्तर है कि जो प्रभु से कहता है कि ''मैं अपना जीवन तुझे दे रहा हूं और जो कुछ भी तू चाहता है कि मैं करूं, मैं वही करूंगा।''